शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका
बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी सन् 2022 प्रवेशांक
प्रधान संपादक
अमित कुमार बिजनौरी
संपादक
शैलेन्द्र पयासी
सह संपादिका
मधु शंखधर स्वतंत्र
मूल्य :- सप्रेम

शारदे काव्य

मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक

5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

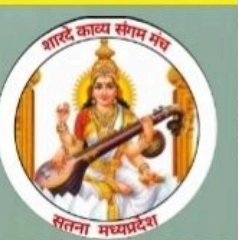

अनुक्रमणिका

01 मुख पृष्ठ
02 अनुक्रमणिका
03 संपादक मण्डल
04 प्रधान संपादकीय
05 संपादकीय
06 सह संपादिका
07 तकनीकी सहायक
08 संरक्षक की कलम
09 मधु शंखधर स्वतंत्र
10 प्रीति चौधरी मनोरमा
11 शैलेन्द्र पयासी
12 व्यंजन आनंद मिथ्या
13 ओमप्रकाश श्रीवास्तव ओम
14 गजेन्द्र हृहरनो दीप
15 नरेन्द्र वैष्णव शक्ति
16 दीपिका रूख मांगद दीप
17 संजय कुमार
18 डॉ बृजेश कुमार शंखधर
19 गौतम केशरी
20 डॉ यशपाल सिंह चौहान
21 सुषमा शर्मा
22 कविता चव्हाण
23 लक्ष्मीकांत वैष्णव
24 अनुराधा पारे
25 इन्दु सिन्हा इन्दु
26 सुधा पांडेय
27 निशा अतुल्य
28 ज्ञान वती सक्सैना
29 रश्मि शुक्ल
30 पूजा मिश्रा
31 साधना तिवारी
32 एम एस अंसारी शिक्षक
33 सुखमिला अग्रवाल भूमिजा
34 सुनीता तिवारी
35 डॉ संजू त्रिपाठी
36 साधना मिश्रा विंध्य
37 डॉ कृष्ण जोशी
38 रश्मि मोयदे
39 संविता मिश्रा
40 हंसराज सिंह हंस
41 पुष्पा प्रांजली
42 रामजी त्रिवेदी
43 वन्दना खरे मुक्त
44 सविता मिश्रा

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका
बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

संपादक मण्डल

संपादक
शैलेन्द्र पयासी

प्रधान संपादक
अमित कुमार बिजनौरी

तकनीकी सलाहकार
चंदन केशरवानी

संरक्षक
ओमप्रकाश श्रीवास्तव ओम

सह संपादिका
मधु शंखधर स्वतंत्र

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

प्रधान संपादकीय...

माँ वागेश्वरी के श्रीचरणों में नमन वंदन

आप सभी सुधिपाठकों , शुभचिंतको ,कवि और कवयित्रियों को बसंत पंचमी की ढेरों ढेरो बधाई और अनंत शुभकामनाएं के साथ साथ जो सहयोग आपका हमें लगातार मिल रहा है उस प्यार के लिए आपका बहुत बहुत आभार ।

जहाँ आपके सहयोग से शारदे काव्य मंच ने साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बनाई है । और साहित्य पथ पर बढ़ते कदमों के साथ साथ आप कवि और कवयित्रियों की रचनाओं को संकलित कर शारदे काव्य ई पत्रिका के प्रवेशांक आपके हाथों में सौंपते हुये मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है ।

आ० रोहित चौरसिया संस्था के संस्थापक और नित प्रतिदिन कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले आ० शैलेन्द्र पयासी और मंच के सभी कर्णीयकरणी के सदस्यो ने जो जिम्मेदारी मुझे दी है । आप सभी का बहुत बहुत आभार और साथ साथ आप सभी से आशा उम्मीद करता हूँ कि आप शारदे काव्य मासिक ई पत्रिका को अपना प्यार दुलार अवश्य देंगे और हमारे पाठकगण पत्रिका को पढ़कर प्रत्येक रचनाकार को अपना आशीर्वाद और प्यार देने में संकोच नहीं करेंगे ।

यदि पत्रिका में किसी प्रकार की कोई त्रुटि रह गयी हो उसके लिए संपादक मण्डल को क्षमा करें ।

समस्त संपादक मण्डल का मैं पुनः आभार व्यक्त करता हूँ और सभी को बधाई देता हूँ ऐसे ही साहित्य सेवा करते रहे और नये कीर्तिमान स्थापित करते रहें और साहित्य पथ पर अग्रसर होते रहे ।

अमित कुमार बिजनौरी

अमित कुमार बिजनौरी

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका
बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

संपादक की कलम से..

बसंत पंचमी के पावन पर्व पर आप सभी साहित्यकारों एवं सम्मानित वरिष्ठ एवं नवांकुर लेखकों, कवियों, कवित्रियों को बसंत ऋतु आगमन की हार्दिक शुभकामनाएं एवं सभी को प्यार भरा नमस्कार।

जैसा कि आप सभी को विदित है कि वसंत ऋतु की शुरुआत हो चुकी है । आज
वसंत पंचमी के पावन पर्व है और मन में एक हर्ष उल्लास है।
पत्ते पेड़ों से गिर रहे हैं,खेतों में पीली सरसों के नए फूल खिल रहे हैं और मौसम में भी एक बहार है। दिल में उमंग है, गेहूं की बालियां लह लहा रही है ।मन आनंदित है पुष्पित प्रफुल्लित है।

कुछ नया करने का मन में एक जुनून जज्बात है।

बसंत पंचमी पर मां सरस्वती के पूजन अर्चन कर के हम सभी मां का आशीर्वाद ले,अपनी ज्ञान कला संस्कृति को आगे बढ़ाएं ,अपनी प्रतिभा को निखारे और अपनी कलम से नवसृजन कर वसंत का उल्लेख करें।

बसंतमय रचनाओं से पत्रिका भी बसंतमय हो गई है। इस बार आप सभी के सहयोग से और साहित्यकारों की नित उठ रही मांग से शारदे काव्य संगम मंच सतना मध्य प्रदेश अपने साहित्यकारों के लिए अनूठी बेमिसाल पेशकश बसंत विशेषांक प्रकाशन को लेकर आप सभी के बीच उपस्थित है। नव प्रतिभाएं युवा प्रतिभाएं जिनमें कुछ करने का एक जज्बा है एक जुनून है उन्हें निखारे उन्हें एक मंच प्रदान करें उनकी एक पहचान और नाम हो इन्हीं प्रयासों के साथ शारदे काव्य संगम निरंतर प्रयास रहता है। हम आप सभी अपना सहयोग आशीर्वाद बनाए रखिए हम आगे भी आप सभी की रचनाओं को बढ़-चढ़कर प्रकाशन करेंगे।आशा है बसंत विशेष अंक आप सभी को पसंद आएगा। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ जय मां सरस्वती का आशीर्वाद आप सभी के जीवन में बना रहे ।

शैलेन्द्र पयासी
संपादक

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

सहसम्पादकीय .....

बसंत ऋतु की आप सभी को अनंत बधाई व शुभकामनाएं। शारदे काव्य संगम की स्थापना माँ वीणापाणि की कृपा से **15** जून **2016** को म. प्र. के रोहित चौरसिया 'अटल' जी द्वारा की गई । आज यह मंच साहित्यिक क्षेत्र में निरंतर प्रगति करते हुए , आप सभी कलमकारों के विकास हेतु आप सबके समक्ष ई - पत्रिका प्रकाशित कर रहा । जिसके माध्यम से सभी श्रेष्ठ कलमकारों की रचनाएँ लोगों तक पहुँच सके। बसंत शीर्षक पर आधारित है यह पत्रिका विशेषांक।

बसंत ऋतु को ऋतुओं के राजा की संज्ञा दी गई है । क्योंकि ऋतुओं में ग्रीष्म, वर्षा, शरद तथा पतझड़ वातावरण को प्रभावित करते हैं लेकिन वसंत ऋतु के आते ही पसीना, ठिठुरना, कीचड़ आदि नकारात्मक तत्त्व दूर हो जाते हैं । प्रकृति की सुखद सुषमा चारों ओर वातावरण को सुशोभित करती है । पुष्प स्वयं कुसुमित होते हैं । ... प्रकृति के इसी परिवर्तन के कारण वसंत को 'ऋतुराज' या 'ऋतुओं की रानी' कहा जाता है। यह पावन बसंतोत्सव आप सभी के जीवन को हर्षोल्लास से भर दे , यही शुभकामना है....

है अनंत शुभकामना , ऋतु बसंत शुभ साज ।
शुभग श्रेष्ठतम् पत्रिका , मातु शारदे आज ।।

सह संपादिका
डॉ. मधु शंखधर 'स्वतंत्र'
प्रयागराज

पृष्ठ सं. 06

तकनीकी सहायक
की कलम से.....

उमंग है सुर ताल की,मिले ज्ञान के रंग।
माँ वीणा आशीष दें, रहें कलम के संग।।

हिंदी साहित्य एवं हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ ही नए कलमकारों की रचनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिए शारदे काव्य संगम साहित्य मंच *वसंत पंचमी* के शुभ अवसर पर माँ शारदे के पावन चरणों का आशीष लेकर ई-पत्रिका का विमोचन कर रहा है। वसंत पंचमी को ऋतुराज भी कहा जाता है। वास्तव में माँ सरस्वती का विस्तार ही वसन्त है। अत: वसन्त पंचमी को माँ सरस्वती के जन्मोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन ज्ञान,कला और संगीत की देवी माँ सरस्वती की पूजा की जाती है। कहते हैं वसन्त पंचमी के शुभ मुहूर्त में में किसी कार्य को आरम्भ करने से वह कार्य शुभ होता है एवं माँ शारदे स्वयं इस कार्य की साक्षी बनती हैं। शारदे काव्य संगम मंच ई-पत्रिका के प्रधान सम्पादक श्री अमित बिजनौरी जी, सम्पादक श्री शैलेन्द्र पयासी जी एवं समस्त सम्पादक मंडल को मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। माँ शारदे की कृपा से सभी कलमकारों की लेखनी को एक नई पहचान मिले ऐसी मेरी शुभकामनाएं हैं।

तकनीकी सहायक,

[केसरवानी©चन्दन]
कानपुर नगर उत्तर प्रदेश

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

संरक्षक की कलम से ..

सभी सम्मानित साहित्यकारों बसंत पंचमी की हार्दिक शुभकामनाएं
आज मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि माता सरस्वती की कृपा से हमारा आपका आदरणीय रोहित जी द्वारा **15/06/16** को स्थापित एवं लगातार साहित्य सेवा करते हुए " शारदे काव्य संगम" हिन्दी साहित्य की सेवा में कदम बढ़ाते हुए शारदे ई पत्रिका का प्रथम अंक बसंत पंचमी विशेषांक लेकर आपके समक्ष उपस्थित है। वास्तव में साहित्य का समाज में वही स्थान है जो शरीर में प्राण का, अंतरिक्ष में सूर्य का जिस प्रकार शरीर प्राणों के बगैर मिट्टी होता है, अंतरिक्ष सूर्य के बगैर व्यर्थ होता है उसी प्रकार मानव समाज साहित्य के बिना नहीं रह सकता है। जिस समाज में जिस प्रकार के साहित्य का प्रभाव होता है, वह समाज उसी प्रकार का बन जाता है। इसीलिए साहित्य में यह आवश्यक है कि साहित्य सार्थक, समाजोपयोगी एवं सकारात्मक हो। हमारी इस पत्रिका में बहुत से वरिष्ठ एवं नवांकुर साहित्यकार अपनी रचनाओं के साथ उपस्थित हुए हैं। पूर्ण प्रयास किया गया है कि इस पत्रिका में कोई भी रचना त्रुटिपूर्ण एवं पूर्व प्रकाशित न समाहित होने पाए। फिर भी यदि भूलवश त्रुटि हुई हो तो उससे सम्पादक मण्डल को अवगत कराने का कष्ट अवश्य करें। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप लोगों के सुन्दर विचारों के शब्द रूप पुष्पहार से शारदे काव्य संगम परिवार निश्चित रूप से निरन्तर ई पत्रिकाओं का प्रकाशन करता रहेगा तथा हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान हासिल करेगा। आप सभी को पुनः बसंत पंचमी की हार्दिक शुभकामनाएं एवं सहयोग के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

आप सभी के सहयोग का आकांक्षी

ओम प्रकाश श्रीवास्तव ओम
संरक्षक
शारदे ई पत्रिका

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका
बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! माँ शारदे का वंदन !!

प्रिय ऋतु बसंत पावन,धरती का रूप चंदन।
माँ हिय प्रकाश भरती , माँ शारदे का वंदन.....।।

माँ पीत वस्त्र धारी, शुभ हंस पर सवारी।
कर में बजती वीणा , पुस्तक व पुष्प धारी।
आराधना करे जो , ज्ञानी बने वो नंदन।
माँ हिय प्रकाश भरती, माँ शारदे को वंदन....।।

बालक धरती पर जो , अज्ञान रूप फिरते।
छल दम्भ शीश चढ़ते, अज्ञानता से घिरते।
माँ की शरण में आकर , करें हैं फिर वो क्रंदन।
माँ हिय प्रकाश भरती, माँ शारदे को वंदन.....।।

माँ को बसंत भाए, धरती भी मुस्कुराए।
है ऋतु बसंत सुंदर, शुभ ज्ञान भाव भाये।
माँ दे दो वर मधु को, चले लेखनी निरंतर ।
माँ हिय प्रकाश भरती, माँ शारदे को वंदन..... ।।

*मधु शंखधर *स्वतंत्र*
प्रयागराज

!! बसंत का संदेशा आया !!

बसंत का संदेशा आया,फूल खिले हैं गुलशन में,
आकर ठहर गयी है देखो मोहक सी खुशबू मन में।
पीले -पीले फूलों की चादर ओढ़े है वसुधा रानी,
लजा रही हो जैसे दुल्हन, निज रूप देख दर्पण में।

नवकोपलों के आभूषण पहने खड़े हैं विटप ऐसे
जैसे कंचन जल से नहाकर आया हो मौसम उपवन में।
अद्भुद है सौंदर्य धरा का,अनुपम छवि निराली है
बज रहे हैं मृदंग जैसे मधुमास के आगमन में।

पूर्णिमा की चाँदनी बिखरी है मखमली सी रेत पर,
जैसे चन्द्रकला उतर आईं हों दुग्धवर्ण से दामन में।
आया है ऋतुराज लेकर मधुर मिलन का उपहार ,
भीग रहे हैं दो बदन एक होकर प्रेम के सावन में।

कल्पनाओं के पर लगा कर उड़ रहे हैं व्योम में मन,
हो रहे हैं मंत्रमुग्ध प्रकृति के इस आकर्षण में।
तन-मन, जीवन पुलकित हैं पाकर वसंत का सानिध्य,
बेला, चंपा और चमेली की सुगंध घुल गयी है पवन में।

प्रीति चौधरी"मनोरमा"
जनपद बुलंदशहर
उत्तरप्रदेश

!! देख बसंत का मौसम आया है !!

देख बसंत का मौसम आया ।
मौसम में फिर खुमार छाया ।
पेड़ पत्तों की आहट लेकर ,
ऋतुराज बसंत बहार लाया ।।

खेतों में फसलें अब लहरा रही ।
नये आगमन के ऋतु दस्तक दे बही ।
धरती पर पपीहे गुनगुनाते है अब ,
जो नए गीत को सुनाते है वही ।।

आम के पेड़ पर मोजर छाने लगे हैं ।
पेड़ों पर बौर भी आने लगे है ।
फूलों पर भौंरे मंडराते है सारे ,
बसंत पवन अंगड़ाई लगाने लगे है ।।

बसंत की अद्भुत छटा बिखरी है धरा ।
नभ पर आसमानी चूनर धानी है भरा।
आओ बंसत का स्वागत करें हम ,
मिलकर अपने जीवन को कर दे हरा ।।

शैलेन्द्र पयासी
विजयराघवगढ़ कटनी मध्यप्रदेश

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका
बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! बसंत ऋतु !!

वासन्ती ऋतु आगमन , देती सबको त्राण ।
बूढ़े बच्चों के तभी , खिल उठते मन प्राण ।।
खिल उठते मन प्राण , खुशी चहुँ दिश में छाती ।
घटती जाती ठंड , प्रकृति में ऊर्जा आती ।।
कहे व्यंजना आज , चलाना अब तुम खन्ती।
खेती कर पुरजोर , सुखद ऋतु है वासंती ।।

वासन्ती बहती पवन, उष्मा भी है तेज ।
जागे सूरज देवता , सजती सरसों सेज ।।
सजती सरसों सेज , बहारें खिलकर आतीं ।
मौसम पाए लोच , सुहाने गीत सुनातीं ।।
चंचल मत हो आज , हुआ मौसम सुखवन्ती ।
" मिथ्या " है चहुँओर , खिली माया वासन्ती ।।

वासन्ती में प्रीत भी , भरती नयना कोर ।
उर भर जाता भाव से, मन का नाचे मोर ।।
मन का नाचे मोर, पाँव की पायल बाजे ।
मौसम भरता रंग, अनंगा स्वयं विराजे ।।
कहे व्यंजना आज , पिया लाते बैजन्ती ।
केश सजाती नार , बनी है खुद वासन्ती ।।

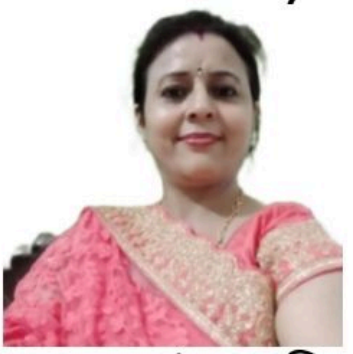

व्यंजना आनंद ' मिथ्या '
योग शिक्षिका
बेतिया (बिहार)

!! महके बसंत !!

स्वागत कर लो आज
बना यह सारा साज।
उपवन खिले देखो
महके बसंत के फूल।

फैली चहुँदिश देखो
हरी-हरी हरियाली।
बसंत मौसम आया
मिटेंगे उर के शूल।

बसंत जब भी आता
खुशी के पैगाम लाता।
सब जन जाते तब
ताड़क गरमी भूल।

करलो स्वागत तुम
मौसम सुहाना यह।
मिलेगी अबतो मुक्ती
ऋतु जो उड़ाये धूल।।

ओम प्रकाश श्रीवास्तव ओम
तिलसहरी, कानपुर नगर

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! बसंत !!

देखो ऋतुराज आए ,
चहुँ दिशि मस्ती छाए ,
कण-कण है बौराए,
स्वागत है जी श्रीमान।

टेसू सारे खिल रहे,
मधु-रस घोल रहे,
मगन हो डोल रहे,
धरती के बने शान ।

बसंत बहार चले,
रोम-रोम प्यार पले,
नेह-भरे छाँव तले ,
हुआ नवल विहान ।

गीत नए बुन कर,
मन-मीत चुन कर,
धुन प्रिय रच कर,
" दीप " कर प्रीत-गान ।

गजेन्द्र हरिहारनो"दीप"डोंगरगाँव
जिला राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! बसंत के रंग !!

शुभ बसंत के रंग , आज खुशियाँ अपनाएँ ।
तुलें सृजन शुभ तौल ,भाव निज जन नप आएँ।।
दुर्मिल जान सुदेह , संत मर्यादा धारें ।
मनभावन हिय प्रीत , मनुज मन कष्ट निवारें ।।

साक्षी साक्षर देश , अटल विश्वास जगाए ।
जन मानस हित नित्य , सत्य पथ चलता जाए ।।
सुरभित पुष्प पराग , मित्र सम शिक्षा जानो ।
उज्ज्वल बने भविष्य , चित्र शुभकर जन मानो ।।

शुचि प्रयाग जन ध्यान , लगाना पावन गोता ।
सुरसरि पुण्य प्रभाव , पित्र कुल मोक्षित होता ।।
ऋतु बसंत रसराज , साज कवि करता वर्णित ।
आम्र बौर शुभ ठौर , करे कोकिल शुभ कर्णित ।।

पावन देश महान , समाहित जन संस्कारी ।
ऋतु बसंत शुभ मान , संत अलि घूमे भारी ।।
संत कर्म निज धर्म , पंथ शुभ गाथा गाएँ ।
बासंती जग पर्व , शुचित मन भाव मनाएँ ।।

नरेन्द्र वैष्णव , शक्ति
जांजगीर- छत्तीसगढ़

!! आया बसंत !!

आई वसंत ऋतु सुहानी,
अमुवा झूमें लगे हैं बौर।
कोयल प्यारी कूक रही है,
कानन में नाच रहा है मोर।

पीली पीली सरसों लहराई,
हरे-भरे चने ने ली अंगड़ाई।
डोल रही है हर डाली पतवा,
भ्रमर ने गुन-गुन तान सुनाई

वन -उपवन बाग बगीचे,
ऋतुराज का स्वागत करते।
तितलियाँ मंडरा रही पुष्पों पे,
भ्रमर मकरंद हैं चखते।

मन का मिटाकर अवसाद,
खेलें सखियाँ जी भर फाग।
अवनि-अंबर पुलकित मन,
आया-आया देखो ऋतुराज।

धरती सजी दुल्हन के जैसी,
कामदेव ने जैसे किया शृंगार।
पीहू -पीहू बोले पपीहरा,
प्रकृति ने छेड़ी गीत मल्हार।

दीपिका रुखमांगद दीप
बैतूल, मध्यप्रदेश

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! बसंत के रंग !!

वृद्धावस्था पर पहुंचा अब ठंड
सुसज्जित होने लगे द्रुमों के अंग
शरद ऋतु पतझर को,ले गया अपने संग
पूरी प्रकृति में छा गयी,फिर बसंत के रंग।

सजने लगी पुष्पों की बगिया
खिलने लगे रंग-बिरंगे फूल,
आम्रमंजरी भी अब इतरा रही
बिखरा रही खुशबू ,सरसों के फूल।

सुरमयी,सिंदूरी हो रही हर शाम आज
मलय समीर छेड़ रहा,अंगड़ाईयों के राग
तितलियों के लिए दिन आए बहार के,
भंवरे के दिन आए,फूलों संग प्यार के।

नव पल्लव से लदे हैं पेड़
चारों दिशाओं में हरियाली छाई,
नव उमंग,नवल तरंग से भरे हैं सभी
ऋतुराज बजा रहे प्रीत की शहनाई।

©संजय कुमार (अध्यापक)
इंटरस्तरीय गणपत सिंह उच्च विद्यालय,
कहलगाँव
भागलपुर (बिहार)

!! बसंत !!

ऋतु बसंत शुभ आगमन , कुसुमित पुष्प हजार।
धरा सुशोभित हो रही , अनुपम ऋतु आधार ।।

मातु शारदा हंस पर , यह बसंत शुभ वार ।
पीत पुष्प शोभित करे , ज्ञान तत्व का सार।।

शुभग बसंती रंग ले , आया राज बसंत ।
देव स्वयं हर्षित हुए , हुआ दुखों का अंत ।।

आम्र मंजरी की महक , डाली सरसों फूल ।
दृश्य रंग से है भरा , प्रकृति हुई अनुकूल ।।

कोयल कूके बाग में , नार करे श्रृंगार ।
प्रेम शुभग पलता ह्रदय , जब बसंत त्योहार ।।

प्रिया बहुत होती मगन , देख सामने कंत ।
इस बसंत में पुष्प सम , शोभित होते संत ।।

देश बसाए सभ्यता , पूजे शुभग बसंत।
फैले ज्ञान प्रकाश ही , तम का होता अंत।।

भ्रमर बैठते पुष्प पर , कोयल गाती गान।
ऋतु बसंत में यह धरा , पहने नव परिधान।।

सप्त रंग से नभ सजे , देव हर्ष का द्वार ।
हर्षित वीणावादिनी , साधक का उद्धार ।।

पीत वस्त्र में माँ सजी , पहने पीला हार ।
यह बसंत हो शुभ बहुत , यही कामना सार।।

डॉ . व्रजेश कुमार शंखधर
प्रयागराज

!! बसन्त के रंग !!

सुबह-सुबह कोयल क्यों मलहार गाती है?
बागो के फूल क्यों मुस्कुराते है?
देखो ये भंवरे क्यों गुनगुनाते है?
मौसम भी अब रंग भरने लगा है ,
प्रकृति की शोभा बढ़ने लगा है ।

भास्कर भी पहले , निकल आता है ,
नभ के बादल छंट जाते है।
धूप का किरण नजर आता है ।
मौसम बड़ा सुहाना आया है , बसन्त साथ मे
लाया है ।

चारो तरफ हरियाली है ,
खेतों में , सरसो की लहलहाती किलकारी है।
धरा भी क्या सौन्दर्य रूप लाया है?
स्वर्ग भी , पृथ्वी पर उतर आया है।
दिलो पे छाई रवानी है ,
बसन्त की नई कहानी है।
वृक्षों में भी खूबसूरत फल लगेंगे ,
ये मौसम भी क्या बहार लाया है ।
साथ मे बसन्त आया है।

गौतम केशरी , फारबिसगंज अररिया(बिहार)

!! बसंती ऋतु !!

आये बसंती ऋतु जहाँ।
छाये सुखद आभा वहाँ।
चारों तरफ सरसों खिली।
पुष्पों से नव शोभा मिली ।।

कुसुमित हुए नव पुष्प जब।
गाये भ्रमर नव गान तब ।
धरती सजी बस पीत से ।
ऋतु राज की शुभ रीत से ।।

गर्मी गई अब शीत है ।
मन में बसाए प्रीत है ।
कोयल की मीठी तान है।
ऋतुओं बसा शुभ मान है ।।

देवों ने यह माया रची ।
शुभता बसंती की बची।
नैनन छवि अभिराम है ।
होता यथोगुण नाम है ।।

रंगों का यह अनुराग है ।
इसमें समाया फाग है ।
यह सप्त रंगों को सजा।
यह पीत अनुपम दे मजा।।

डॉ .यशपाल सिंह चौहान
नई दिल्ली

!! वासन्ती !!

वासन्ती ही रंग में, खिला सखी मधुमास।
भँवरे गुंजन कर रहे, महकी कली सुवास।
महकी कली सुवास,बाग में देखो आली।
कुंजन खिलते फूल,देख खुश होता माली।
सुषमा की है सोच, भली होती दमयन्ती
आओ सखियों रंग , खिला प्यारा वासन्ती।।

वासन्ती क्यारी सजी, फूली सरसों पीत।
मन मयूर सा नाचता, गाए मनवा गीत।
गाए मनवा गीत, चली है हवा दिवानी।
गाती कोयल डाल, प्यार की मधुर कहानी।
सुषमा करती गान, राग है जैजैवन्ती।
देखो चारों ओर, महक ये है वासन्ती।।**1**।।

वासन्ती मकरंद का, भ्रमर करे रस पान।
फगुवा देखो है चली, गाती सखियाँ गान।
गाती सखियाँ गान, लाल है टेसू फूले।
देकर ढोलक थाप, गोप है सुध बुध भूले।
आमों पर है बौर, हवा भी है सामन्ती।
राधा कान्हा संग, रास देखो वासन्ती।

सुषमा शर्मा -इन्दौर (म.प्र)

!! बसंत के रंग !!

आया रंगो का त्यौहार
छाई खुशियों की बौछार
बंसत आया धीरे धीरे
गीत भी गावों होले होले

आकाश में उड़े दिखे पतंग
आपके जीवन में भरे उमंग
बंसत पंचमी की आई बहार
फुल भी ले रहे अपना आकार

सर्दी को तुम पीछे छोड़ो
बसंत ऋतु का स्वागत करो
फूलो पर भवरे मंडराते है
तितलियाँ भी खिलखिलाती है

ठंडी से मिले अब छुटकारा
धुप का लगेगा थोड़ा मारा
सूरज को ना मिले अब छुट्टी
रंग भी लेकर अपने मुट्ठी

कविता चव्हाण,
जलगांव, महाराष्ट्र

!! प्रेम पुष्प !!

पुष्पित प्रेम खिला जो मन में,
फैलाये खुशबू उपवन में।।१।।

खुशियों के अब साज बजेंगे,
घर फ़ूलों के माल सजेंगे।।२।।

हृदय बसे है मंजुल प्रीता,
मिलन हमारा अमल प्रतीका ।।३।।

पावस मासी उर्वी खेमा ,
पुष्पित प्रेयसी प्रतीक प्रेमा।।४।।

शीतल मोती खास सजाए,
अंशु यह कांति घास दिखाए।।५।।

जगमग जगमग दीप जलाएं,
पतझड़ से पादप घबराएं।।६।।

कोपल सुंदर लगती तरुवर,
आया बसंत बनकर वधु वर।।७।।

देख ग्रीष्म को जीवन प्यासा,
धरा धरे यह ऋतु बरमासा।।८।।

खुशियाँ रखकर बस चितवन में .....
पुष्पित प्रेम खिला जो मन में,
फैलाये खुशबू उपवन में.....

लक्ष्मीकांत वैष्णव 'मनलाभ'
जिला- जांजगीर चांपा (छ.ग.)

!! बासन्ती !!

बासन्ती फैली पवन,छाई छटा अनूप।
धरती अम्बर डोलते,सजता ललित स्वरूप।।
सजता ललित स्वरूप,लगे है मन को प्यारा।
पीत रंग में आज,सजा है मौसम सारा ।।
पीले पहनें वस्त्र,मान रखते किवदंती।
ढोल सुरीले चंग,पवन फैली बासन्ती।।

बासन्ती पुरजोर है,रखना मन में जोश।
उत्सव के माहौल में,खोना मत तुम होश।।
खोना मत तुम होश,झूमना दे दे ताली।
प्रीत बढ़ाएँ कोश,गाए कोयलिया काली।
गाओ सब ऋतुराग,धरा छाई हेमंती।
आओ भर उन्माद,भारती है बासन्ती।

बासन्ती साम्राज्य है,शीत हुई है मंद।
ऋतु में आई उष्णता,गुने सवैया छंद।।
गुने सवैया छंद,मगन हो गाएँ सारे।
भरे प्रीत हिय भाव,बैर बैरी से टारे।।
श्वेतवाम नव गात,लगे जैसे सेवन्ती।
धरें नार नर हाथ,आज सब है बासन्ती।।

अनुराधा पारे
जबलपुर, मध्यप्रदेश

!! अपना अपना वसंत !!

वसंत आया वसंत आया ,
चारों ओर इक शोर है वसंत के आने का,
वसंत तो आता ही है हर साल,
मायने अलग अलग हैं वसंत के,
मजदूर की दिहाड़ी मिली तो वसंत है,
वसंत अब टेसू के फूलों सा रंगीन नही,
हवाओं में मदहोशी का संगीत नही,
अदृश्य भय से भयभीत लोगो के मन में,
जीवन मुस्कराये तो वसंत है,
प्रेम जब टूटकर बिखर जाता है,
बिखरकर आत्मा में समाए तो वसंत है,
झोपड़ी में भूखे बच्चे की भूख मिट जाए,
लहलहाती फसलों से खुश,
कोई किसान मौत को ना गले लगाए,
तो वसंत है ,वसंत है,वसंत है

इन्दु सिन्हा"इन्दु"
रतलाम(मध्यप्रदेश)

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका
बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! आया बसन्त !!

धानी चूँदर पीली बिंदिया ,
सखि अंग-अंग हरियाली लसे।
पीली सरसो हलराई रही,
अब मंजरि आम्र में आयी बसे।।

सब खेतन में हरियाली लसी ,
गेहुँवा निज बाली हिलाई रही।
बउरे अमवां महुआ बेलवा ,
निज गोदी में लाल खेलाई रही।।

छवि देखि बसंत क पुलकित है,
सब जीव-जगत उल्लास भयो।
खग - मृग,जन-मन आह्लादित है,
मन- मोद-प्रमोद क वास भयो।।

नव रूप अनूप धरीं शारदा ,
ममतामयि माँ धरणी पे चलीं।
कर पुस्तक वीणा वादिनी माँ ,
हम मूढ़ पे ज्ञान लुटाने चलीं।।

चलिगा पतझड़, शिशिरौ, शरदौ,
सखी देख बसन्त ई छाई गयो।
पियरी परिधान सजी ललना,
दमके बिंदिया, प्रिय आई गयो।।

चहुँ ओर बिछावन बा हरियर,
खेतवा, खलिहान निहाल भयो।
कहीं नाचत बा नीलकंठ मगन,
कहीं कोकिल गीत सुनाई गयो।।

धरणी नव रूप सजाई रहै,
प्रकृती कर खेल निराला भयो।
पल-पल धरती नव रूप धरा,
मदनौ लखि रूप लजाई गयो।।

चल आव सिवान में आज चलीं,
शस्य-श्याम धरा कर रूप लखीं।
खग-वृन्द उड़े तितली सम ह्वै,
वन-उपवन रूप निहारीं सखी।।

सुधा पांडेय
छतेरी -मानापुर ,वाराणसी
उत्तरप्रदेश

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! वासन्ती !!

वासन्ती बहती हवा , मतवाली सी चाल ।
कामदेव के बाण से,बिगड़ा सबका हाल ।
बिगड़ा सबका हाल, हुए हैं सब मतवाले ।
फैलाते जब जाल , रहें सब मन संभाले ।
कहे निशा ये राज , बात लगती सामंती
आए साजन पास, लगे ऋतु है वासन्ती ।

वासन्ती अहसास में ,साजन रहते पास
मन पुलकित रहता सदा,उनका हृदय निवास ।
उनका हृदय निवास , लगा कर रखती ताला
आतें है वो पास , फेरती मन की माला ।
करते कितनी बात , पहन माला बैजंती
कटती प्यारी रात , पवन चलती वासन्ती ।

वासन्ती ऋतु आ गई , महके सारे बाग
कोयलिया कुहकन लगी , मीठी गाती राग ।
मीठी गाती राग , सुनाती सारी बातें।
मेरे अच्छे भाग , कटें हैं प्यारी रातें ।
खोल खड़ी है द्वार , लिए रति ऋतु हेमंती ।
कामदेव के साथ ,चली पुरवा वासन्ती ।

निशा"अतुल्य"
देहरादून- उत्तराखंड

!! आहट ऋतुराज की !!

ऋतुराज की आहट पाकर
धरा चहक महक
अकुलाई है
ओढ़ चुनरिया सरसों की पीली
मंद मंद मुस्कराई है
आहट का सारा सच जान
मन ही मन लजाई है

मंगल गाएँ खग विभोर हो
कोयल की तान लगे शहनाई है
आम बौर पर छाई मस्ती छाई अद्भुत तरुणाई है

गेहूँ चने की बालें चूनरी पर
उमग उमग हुलसाई है
हरियाली ने हरी-भरी
चाहत चहूँ ओर बिछाई है

नव किसलय,नव पल्लव ने
रूत बन,बहार महकाई है
फूलों ने भी
खिलखिलाकर फूलों ने भी
तितली भँवरों पर धाक जमाई है
राग पराग में जीवन का
सारा सच बिखराई है

धूप सुहानी,ढली है ठिठुरन
बहती शीतल पुरवाई है
पा नेह समुन्दर नदियों का
फ़सल निखर लहलहाई है
क़ुदरत का सारा सच भर
रस झलकाने को आतुर गेहूँ की बालियाँ
झोंकों संग हुलसाई है

धवल चाँदनी ने महफिल में
आह्लाद को सारा सच मान
तारों संग,धूम मचाई है
ऋतुराज की अगवानी में झूमे गगन,झूमे पवन
चंदा संध्या लगे ठुमकने
चहुँदिश छाई अरूणाई है

प्रमुदित मुदित,हर्षित देवों ने
शबनमी सुधा टपकाई है
अपने ईसर की अगुवाई में
धरा ने सुध सारी बिसराई है

ज्ञानवती सक्सैना ‘ ज्ञान‘जयपुर ,राजस्थान

!! ऋतुराज बसंत !!

धानी चूनर ओढ़ के,
धरती भी सरमाये।
ऋतु बसंत के स्वागत में,
बैठी है आँख बिछाये ।

ऋतुराज के आगमन पर,
कड़कती ठंड से राहत पाई।
हर्ष, उल्लास चाहुं ओर,
खुशियाँ ही खुशियाँ आई ।

बसंतपंचमी में पूजी,
जाती सरस्वती मई।
ज्ञान बुद्धि देती हमको,
सबने सद्बुद्धी पाई ।

सरसों के पीले फूलों ने,
प्रकृति को स्वर्णमयी बनाया।
सर्वत्र फैली हुई हरियाली ने,
धरती की शोभा खूब बढ़ाया ।

खिल रहे फूल पलाश के,
आम के पेड़ों पार बौर छाई।
कोयल की कर्णप्रिय ध्वनि,
कुहू-कुहू सबको दी सुनाई ।

साँझ ढाले सूरज की लालिमा,
मन को खूब सुहाये।
दूर कहीं गगन के नीचे,
जोगन प्रीत के गीत सुनाये ।

✍ रश्मि शुक्ल रीवा (म.प्र)

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका
बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

बसंत

ऋतु बसंत की आई
अवनि अति मुस्काई,
गगन देख मगन,
शोभा बड़ी निराली!

प्रकृति कर श्रृंगार,
रूप में लायी निखार,
फूलों में बैठे भवरें,
कलियाँ मतवाली!

नव कोपले वृक्षों की ,
नव संदेशा है देती,
आशा की किरणे नई,
प्राची की जैसे लाली!

ऋतुराज की सवारी,
देखों लगती है प्यारी,
चहुँ ओर खुशहाली,
झुमती डाली -डाली!

पूजा मिश्रा
रीवा म. प्र.

!! बसंत ऋतु !!

बसंत आ गई मन भावनी
लगत सखी अति सुहावनी।

पहली सखी कहे सुन बाई
काली कोयल डाल पर आई
मैं तो अभी देख कर आई
प्रेम का ऐसा गीत गा गई
लगत सखी....।

दूसरी सखी कहे सुन बहना
डाली डाली फूल खिले ना
भंवरे मस्ती में है गाते
पेड़ों पर नये पत्ते भी आ गये
लगत सखी.....।

कहने लगी सब सखियां
धरती ने ओढ़ी हरी चुनरिया
सरसों फूली पीली पीली
धरती लागे जैसे दुल्हनिया
मां सरस्वती का आगमन भा गयो।
लगत सखी.....।

साधना तिवारी रीवा
मध्य प्रदेश

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! बसंत निमंत्रण !!

हे ! बसंत मेरे घर आना ।
मन मिलन का ताना-बाना ।
हे ! बसंत मेरे घर आना !
बंद हैं आँखें नींद बहाना ,
पन्द्रह उम्र सोलह का आना ,
फिरते भौंरे बन दीवाना ,
हर आशिक जाना पहचाना ।
हे ! बसंत मेरे घर आना ।
अंगड़ाई से व्याकुल बाला ,
ले मधुरस का खाली प्याला ,
फूल देख वशीभूत न होना ,
कलियों को भी अवसर देना ।
हे ! बसंत मेरे घर आना ।
श्वेत श्याम का भेद न करना ,
दिल में मेरी चाहत रखना ,
मन की अभिलाषा पूरी करना ,
मध्य निशा में ही तू आना ।
हे ! बसंत मेरे घर आना ।
आम्र गाँछ में बौरें आईं
भूली मैं जग की तन्हाई ,
बिन माली के बगिया सूनी
तू मेरा माली बन जाना ।
हे ! बसंत मेरे घर आना ।
होठ गुलाबी मादक गाल
चेहरे पर बिखरे काले बाल ,
पुरवाई का मस्त तराना
ऐसा मौका भूल न जाना ।
हे ! बसंत मेरे घर आना ।
पहरेदार ना कोई दीवाना
मेरा घर जाना पहचाना ,
तुम ना आओगे तो सोचो
जग कितना मारेगा ताना ।
हे ! बसंत मेरे घर आना ।
मन मिलन का ताना-बाना
हे ! बसंत मेरे घर आना ।

" एम•एस• अंसारी "शिक्षक "
कोलकाता पश्चिम बंगाल

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! हवाएँ लायी हैं पैगाम !!

हवाऐं लायी हैं पैगाम,
किया ऋतुराज ने ऐलान,
बसंत अब आने को तैयार,
फूली कलियां खिले मैदान।

आज फिर अवनी ने किया श्रृंगार,
हरी चुनरी ओढी और पुष्पों के हार,
आंचल है उसका लहका लहका,
पीली सरसों मन बहका बहका।

धरती का सज गया है कोना कोना,
हरे हरे पात है ज्यों मृदुल बिछौना,
रंग बिरंगे नीले पीले और लाल गुलाबी,
कण कण बौराया है लगता महताबी।

आना बसंत,आना अँगना द्वारे द्वारे,
हर लेना सब दुविधा,संकट भी हमारे,
ऐ बसंत तुम अबकी खुशियां भर लाना,
रोग मुक्त अपनी इस धरती को करना।

सुखमिला अग्रवाल'भूमिजा'
जयपुर राजस्थान

!! बसंत के रंग !!

मधुर मधुर बोले कोयलिया
झूमें अमवा की डाली!

आम्र वृक्ष की गंध सुहानी
महक उठे डाली डाली!

पीला पीला रंग दिखे सब
खेतों में सरसों फूली!

उस पर गौरैया खेले
मानो प्रेम इजहार करे!

टेसू फूल दिखे सिंदूरी
बिना गंध के मनोहारी!

पृथ्वी पर जब धूप पड़े
खिली खिली लगने लगती!

प्रेम का यह प्यारा मौसम है
जीवन में खुशियां लाता!

दिल के जो भी बहुत दूर हो
वह मौसम में रंग जाता!

सुनीता तिवारी
भोपाल,मध्यप्रदेश

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका
बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! बसंत ऋतु की आलौकिक छटा !!

बसंत के हसीन रंगों में रंग कर देखो हमारी धरा भी बसंती बसंती होने लगती है,
प्रेमी बसंत के आगमन पर देखो प्रकृति के अधरों पर मुस्कान सजने लगती है।

पतझड़ को नव-जीवन मिलने लगता है और चहुँ ओर हरियाली छाने लगती है,
प्रकृति को नवीन रंगों में रंग कर धरती स्वयं भी अनुपम श्रृंगार करने लगती है।

पौधों पर नव नव कोपलें खिलने लगती हैं पेड़ों की डालियाँ महकने लगती है,
आम के पेड़ों पर बौर लगने लगते हैं, डालों पर कोयले कूहू कूहू करने लगती है।

हर जन का मन हर्षित होने लगता है किसानों के मन में खुशियाँ छाने लगती हैं,
मस्त पवन का झोंका दिल को छूने लगता है मीठी धूप सुहानी लगने लगती है।

भंवरे फूलों पर गुंजायमान होने लगते तितलियाँ भी अठखेलियाँ करने लगती है,
बागों में रंग बिरंगे फूलों को देख के धरती नई नवेली दुल्हन सी लगने लगती है।

धूलों का उड़ना बंद हो जाता है मिट्टी से भीनी-भीनी सोंधी सुगंध आने लगती है,
घर-आँगन सुंदर लगने लगता है खेतों में सरसों की फलियाँ शोभा बढ़ाने लगती है।

जीवन में नई उमंगों का संचार होता है मन की बगिया भी गुलजार होने लगती है,
बसंत ऋतु की अनोखी छटा देखके अलौकिक आनंद की अनुभूति होने लगती है।

डॉ. संजू त्रिपाठी
-"एक सोच"
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

!! बसंत !!

हे बसंत तुम आना!
शुभ संदेशा लाना!

दुख विषाद के क्रंदन को दूर कहीं ले जाना,
भय तनाव भ्रम जाल का शोधन हमें सिखलाना।

हे बसंत तुम आना!
शुभ संदेशा लाना!

प्रेम दया करुणा का स्पंदन अपने संग ले आना ,
अखिल विश्व श्रम को अपनाएं ऐसा ज्ञान सिखलाना।

हे बसंत तुम आना!
शुभ संदेशा लाना!

जड़ चेतन पतित पावन तुम अर्पण कर जाना,
सदाचार से पूरित सेवाभाव जन मन को सिखलाना।

हे बसंत तुम आना!
शुभ संदेशा लाना!

श्रद्धा नेह विश्वास समर्पण का दर्पण दिखलाना,
कल्याणकारी शक्ति पीली सरसों सी बिखराना।

हे बसंत तुम आना!
शुभ संदेशा लाना!

उम्मीदों के प्रतिमानो से तिमिर अवैध मिटाना,
फागुनी बहार मनुहार लिए मधुर संगीत सुनाना ।

हे बसंत तुम आना!
शुभ संदेशा लाना!

साधना मिश्रा विंध्य
लखनऊ ,उत्तर प्रदेश

!! बसंत के रंग !!

बहुत सुंदर बसंत के रंग,
मन में उमंग खुशी हो संग।।

पीला रंग प्यार हो अपार,
चारों और सरसों की बहार।।

कोयल की कूक, आम के मौर,
चारों और प्रसन्नता की भौर।।

बसंत रंग में रंग जाएं सभी,
खुशी बड़े,गम ना हो कभी। ।

बसंत बहार , खुशी हो अपार
एक दूजे के संग अटूट हो प्यार।।

लेकर पतझड़ में बहार खुशियां
लाया अपरंपार ,
लेकर खुशियों की बौछारआया
बसंत पंचमी त्यौहार।।

करने जीवन का उद्धार,माता
आई अपने द्वार
मां की होगी जय जय कार आया
बसंत त्यौहार।।

कृष्णा कह रही बसंत रंग में रंग
जाओ आज,
मां हमारे सिर का ताज़।।

डॉ.कृष्णा जोशी
*इन्दौर मध्यप्रदेश

!! बंसत !!

बंसत बहार देख, ठंडी हवा बनी रेख।
खुशबू फूलों की मेख, पीत पुष्प खिले आज।

शुभ मंगल प्रभात, देख फूलों की सौगात।
मधुमास भरी रात, देखो बसंत का राज।

बंसत की प्यारी भोर, मन में खुशी का शोर।
प्रेम गीत गाएँ मोर, देवता भी करें नाज।

झूम रही सब डाल, हर पात माला माल।
छाई खुशी देखो भाल, होने लगें शुभ काज।

छाई बंसत बहार, देखो खुशियाँ अपार।
बहें मंद सी बयार, पिया करें मनुहार।

पीले सरसों के फूल, ठंड़ी धरा की है धूल।
सुध बुध सब भूल, होंगे सपने साकार।

ऋतुराज भरे रंग, सुंदर मौसम संग।
भरी मन में उमंग, करें कलियाँ पुकार।

छंदाकार लिखे छंद, गुरु काटे सारे फंद।
भरा मन में आनंद, डूबा प्रेम में संसार।।

रश्मि मोयदे, उज्जैन

!! बसंत के रंग !!
लेख

हमारे देश भारतवर्ष में कई ऋतुएँ और मौसम होते है । जिनका अपना विशेष महत्व होता है । जिनमें से एक ऋतु 'बसंत ऋतु' है ।

बसंत ऋतु में शरद ऋतु का अंत होने लगता है और ग्रीष्म ऋतु का आरम्भ होने लगता है । अर्थात न अधिक सर्दी होती है और न अधिक गर्मी । बसंत ऋतु में सुबह शाम हल्की ठंडी और दोपहर में हल्की गर्मी रहती है । इस ऋतु में मौसम बहुत ही सुहावना होता है ।
पेड़ों पर नई -नई पत्तियाँ आने लगती है । यहाँ तक की हरी -हरी घासों पर भी कई रंगों के फूल खिलते हुए दिखाई देते है । आम के पेड़ों पर मौजर भी आने लगते है ,जो कि बसंत के आने का हमें संदेश देते है ।
गाँवों में खेत पीले -पीले सरसों के फूलों से लहराते है जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करते है ।
अधिकतर लोग पीले रंग का वस्त्र पहनते है । इस ऋतु में बसंत पंचमी के दिन माँ शारदे ,विद्या की अधिष्ठात्री देवी की पूजा भी बड़े धूमधाम से होती है ।
रंगों का त्योहार होली की शुरुआत भी बसंत ऋतु से हो जाती है । कई जगह लोग होलिका दहन के लिए लकड़ियाँ एकत्रित करने लगते है ।
बसंत ऋतु में धरा पर हर तरफ़ पीले रंगों की अद्भुत छवि दिखाई देती है ऐसा प्रतीत होता है मानो धरा ने पीले रंग की चादर ओढ़ ली हो । इसलिए बसंत को "ऋतुओं का राजा" अर्थात "ऋतुराज" भी कहा जाता है ।

सविता मिश्रा , वाराणसी ,उत्तर प्रदेश

!! बस आन मिलो एक बार पिया !!

सरसों के पीले फूल खिले,
धरती ने ली अगडाई है !!
मदमस्त कोयलिया कूक रही,
मस्ती में पगलाई सी है !!
मदमाती मन्द समीर चले,
अमवा की डाली झूम रही !!
धरती के स्निग्ध कपोलो को,
जैसे झुक झुक कर चूम रही !!
पागल पपिहा पी पी बोले,
चहुँ ओर बिछी हरियाली है !!
बैरी सी लगे बायर पिया,
बस याद तुम्हारी आती है !!
तुम बिन सब सूना लगता है,
यह व्यर्थ लगे मधुमास पिया !!
अब और न मुझको तड़पाओ,
बस आन मिलो एक बार पिया !!
बस आन मिलो एक बार पिया !!
बस आन मिलो एक बार पिया !!
बस आन मिलो एक बार पिया !!

हंसराज सिंह 'हंस'
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
स्वरचित सर्वाधिक सुरक्षित © मौलिक रचना

बसंत के रंग
विधा- गीत

उत्सव की किलकारें

धानी चूनर हुई बसंती,
फसलें धरा सँवारें।
आने को मधुमास सखी री,
छाने लगी बहारें।।

आम्र-मंजरी मह-मह महकी,
शाखों में खग चहके।
हुई विदाई जाड़े की अब,
तेज बढ़ा रवि दमके।।
कोयल कूकें बुलबुल गाएँ,
चातक गगन निहारें।
आने को.....बहारें।।

छँटता जाए धुंध -कुहासा,
उपवन सुमन खिलाते।
भँवरे खेलें आँख-मिचौली,
गुन-गुन गीत सुनाते।।
मंत्र-मुग्ध सब कलियाँ-गलियाँ,
तितली पंख पसारें।
आने को..... बहारें।।

हर्षित हैं सब धरती के सुत,
फलीभूत होता श्रम।
खेतों में सोना उपजा है,
बजती मन में सरगम।।
घर -घर के आँगन में गूँजें,
उत्सव की किलकारें।
आने को..... बहारें।।

पुष्पा प्रांजलि
कटनी, मध्यप्रदेश

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! बसंत के रंग !!

विधा- कविता

अवनि पुष्पित है हुई आज
हर ओर हरित हरियाली है
भू ने ओढ़ी पीली चादर
गालों पर गुलाब की लाली है
कोयल की मीठी बोली में

तेरी आवाज सुनाती है
झींगुर की झन झन में शायद
पायल का साज सुनाती है
आमों के तरु हैं बौर लदे
खग कलरव का है अंत नहीं
खेतों में गेंहूँ की बाली है
छाया है कहाँ बसंत नहीं
रवि की शोणित है बनी ज्योति
रजनी में शशि शरमाते हैं
काले काले मेघ गगन में
दर्शन करने को आते हैं
चंचल समीर जब बहे मुक्त
तन में शीतलता आती है
मधुमास को छूने के खातिर
तरु की डाली झुक जाती है
आमिय अधर का पुष्पों में
जहाँ तहाँ भू पर बगराया है
स्नान हेतु तेरे बसुधा पर
नव नीर स्वर्ग से आया है

रामजी त्रिवेदी
फर्रूखाबाद, उत्तर प्रदेश

शारदे काव्य
मासिक ई पत्रिका बसंत पंचमी विशेषांक
5 फरवरी 2022 प्रवेशांक

!! बसंत के रंग !!

आया मौसम वसंत का...
आया मौसम वसंत का,,,
आई है बहार चंहूँ और ,
तितलियां मुस्कुरा रही हैं
बहार के आने से,,
खिल गई कलियां भी
वसंत के छा जाने से
आई है बहार चंहूँ ओर

फैल रही है हरियाली
महक रही गलियां सारी
कलियों ने भी महक फैलाई
ऋतु बसंत जो आई है

सरसों पीली, फूल रही है
खेतों की बढ़ गई सुंदरता भारी है
पेड़ पौधे हुए हरे भरे
बसंत ऋतु जो आई है

भा रहा है मौसम सभी को
लगे बड़ा सुहाना सा
पत्ते और कलियाँ,
लुभा रहे हैं मन सबका
आया मौसम बसंत का
आई है बहार चहूँ ओर
आई है बहार चहू ओर ।।

वन्दना खरे ,मुक्त
चचाई जिला अनूपपुर
मध्य प्रदेश

बसंत के रंग
विधा :- लेख

हमारे देश भारतवर्ष में कई ऋतुएँ और मौसम होते है । जिनका अपना विशेष महत्व होता है । जिनमें से एक ऋतु 'बसंत ऋतु' है ।

बसंत ऋतु में शरद ऋतु का अंत होने लगता है और ग्रीष्म ऋतु का आरम्भ होने लगता है । अर्थात न अधिक सर्दी होती है और न अधिक गर्मी । बसंत ऋतु में सुबह शाम हल्की ठंडी और दोपहर में हल्की गर्मी रहती है । इस ऋतु में मौसम बहुत ही सुहावना होता है ।

पेड़ों पर नई -नई पत्तियाँ आने लगती है । यहाँ तक की हरी -हरी घासों पर भी कई रंगों के फूल खिलते हुए दिखाई देते है । आम के पेड़ों पर मौजर भी आने लगते है ,जो कि बसंत के आने का हमें संदेश देते है ।

गाँवों में खेत पीले -पीले सरसों के फूलों से लहराते है जो सभी को अपनी ओर आकर्षित करते है ।

अधिकतर लोग पीले रंग का वस्त्र पहनते है । इस ऋतु में बसंत पंचमी के दिन माँ शारदे ,विद्या की अधिष्ठात्री देवी की पूजा भी बड़े धूमधाम से होती है ।

रंगों का त्योहार होली की शुरुआत भी बसंत ऋतु से हो जाती है । कई जगह लोग होलिका दहन के लिए लकड़ियाँ एकत्रित करने लगते है ।

बसंत ऋतु में धरा पर हर तरफ़ पीले रंगों की अद्भुत छवि दिखाई देती है ऐसा प्रतीत होता है मानो धरा ने पीले रंग की चादर ओढ़ ली हो । इसलिए बसंत को "ऋतुओं का राजा" अर्थात "ऋतुराज" भी कहा जाता है ।

सविता मिश्रा , वाराणसी ,उत्तर प्रदेश